3 आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः

याज्ञवल्क्यो मैत्रेयीमुवाच– मैत्रेयि! उद्यास्यन् अहम् अस्मात् स्थानादस्मि। ततस्तेऽनया कात्यायन्या विच्छेदं करवाणि इति। मैत्रेयी उवाच–यदीयं सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात् तत् किं तेनाहममृता स्यामिति। याज्ञवल्क्य उवाच–नेति।

यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात्। अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति। सा मैत्रेयी उवाच– येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्। यदेव भगवान् केवलममृतत्त्वसाधनं जानाति, तदेव मे ब्रूहि। याज्ञवल्क्य उवाच–प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे। एहि, उपविश, व्याख्यास्यामि ते अमृतत्त्वसाधनम्।

याज्ञवल्क्य उवाच– न वा अरे मैत्रेयि! पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति। आत्मनस्तु वै कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे, जायायाः कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु वै कामाय जाया प्रिया भवति। न वा अरे पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति। न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय सर्वं प्रियं भवति।

तस्माद् आत्मा वा अरे मैत्रेयि! दृष्टव्यः दर्शनार्थं श्रोतव्यः, मन्तव्यः निदिध्यासितव्यश्च। आत्मनः खलु दर्शनेन इदं सर्वं विदितं भवति।

(उपनिषद्)

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

१. याज्ञवल्क्यः मैत्रेयीं कस्य विषयस्य व्याख्यां कृतवान्?
२. मैत्रेयी याज्ञवल्क्यम् किम् अपृच्छत्?
३. वित्तेन कस्य आशा नास्ति? **[2019 AL]**
४. कस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति? **[2017 MH, MN, 20 ZF]**
५. कः सर्वज्ञः भवति? **[2017 MI, 19 CO, CR, 20 ZA]**
६. कस्य दर्शनेन सर्वं विदितं भवति? **[2017 MJ]**

७. याज्ञवल्क्येन मैत्रेयी प्रति किम् अमृतत्त्वसाधनम् उक्तम्?

८. मैत्रेयी कस्य पत्नी आसीत्? **[2019 CN]**

अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–

(क) यथैवोपकरणवतां ..... साधनम्। **[2020 ZA, ZC, ZG, सा०20 ZJ, ZN]**

(ख) न वा अरे ..... प्रियं भवति। **[2015 CS, 17 MJ, 19 AL]**

अथवा याज्ञवल्क्य उवाच न वा अरे ..... प्रियं भवति। **[सा०2020 ZK]**

(ग) याज्ञवल्क्यो मैत्रेयीमुवाच ..... नेति।

२. निम्नलिखित सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ हिन्दी-व्याख्या कीजिए–

(क) आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः।

(ख) आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति।

(ग) आत्मनः खलु दर्शनेन इदं सर्वं विदितं भवति।

३. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) आत्मा ही परमतत्त्व है।

(ख) जो आत्मज्ञ है, वही सर्वज्ञ है।

(ग) आत्मा ही सत्य, अजर और अमर है।

व्याकरणात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय बताइए–

द्रष्टव्यः, श्रोतव्यः, मन्तव्यः।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

तथैव, येनाहं, यथैवोपकरणवतां।

शब्दार्थ

उद्यास्यन् अस्मि = ऊपर जानेवाला हूँ (गृहस्थाश्रम को छोड़कर ऊपरवाले आश्रम में जाने को उद्यत हूँ)। **कात्यायन्या** = कात्यायनी नामक दूसरी (पत्नी) से। **केवलम्** = अकेला। **जाया** = पत्नी। **अस्मात् स्थानात्** = इस गृहस्थाश्रम से। **विच्छेद** = अलगाव। **उपकरण** = धन-धान्यादि। **कामाय** = इच्छा या हित के लिए। **मन्तव्यः** = मनन करने योग्य, **निदिध्यासितव्यश्च** = ध्यान करने योग्य।